वैश्विक नियोग III

कक्षा #१:

I. वैश्विक नियोग और संस्कृति।

कक्षा #२:

II. पालनहार बनना।

कक्षा #३:

III. संचार की कुंजियाँ।

कक्षा #४:

IV. सामाजिक संरचना और सुसमाचार।
V. विलोबैंक की रिपोर्ट: बाइबल और संस्कृति।

कक्षा #५:

V. विलोबैंक रिपोर्ट। (जारी।)
परीक्षा

टिप्पणियाँ -

टिप्पणियाँ -

वैश्विक नियोग III: परीक्षा

संभावित २० अंक प्रश्न

१) पहचान के संतुलित नमूने की चर्चा करें जो मसीह के जीवन में देखा जाता है (पृ. १८२)।
२) संस्कृति के चार स्तरों की व्याख्या और वर्णन करें (पृ. १८५)।
३) एक नए वैश्विक नियोगकर्त्ता के लिए तत्काल संबंध के लाभों का वर्णन करें (पृपृ. १९१,१९२)।
४) दिखाएं कि कैसे यीशु, पतरस और पौलुस ने अपने संदेशों को विभिन्न विश्व दृष्टिकोणों के लिए अनुकूलित किया (पृ. २००)।
५) "अवधारणा पूर्ति" को परिभाषित करें और एक बाइबल उदाहरण और एक आधुनिक दिन का उदाहरण दें (पृ. २०३)।
६) स्वदेशी कलीसिया क्या है (पृ. २०९)?

संभावित १० अंक प्रश्न

१) "संस्कृति" शब्द को परिभाषित करें (पृ. १८१)।
२) "सांस्कृतिक धक्के" का वर्णन करें (पृ. १८७,१८८)।
३) "समन्वयता" और "स्वदेशीकरण" (पृ. १८९) में क्या अंतर है?
४) एक सेवा-नियुक्त केर्यकर्ता की ३ "अधिक प्रभावी" भूमिकाओं की सूची बनाएं (पृ. १९१)।
५) भाषा सीखने की प्रक्रिया में ४ व्यावहारिक चरणों की सूची बनाएं (पृ. १९३)।
६) विश्व दृष्टिकोण और संदर्भीकरण को परिभाषित करें (पृ. १९९,२००)।
७) २ प्रकार की सामाजिक संरचनाओं की सूची बनाएं और उन्हें परिभाषित करें (पृ. २०६)।
८) २ या ३ वाक्यों में विजातीय समाजों की समस्या का वर्णन करें (पृ. २०८)।
९) स्वदेशी कलीसिया के "३-स्वयं" क्या हैं (पृ. २०९)?
१०) वचन का एक संदर्भ लें जो उदाहरण दिखाता है कि कैसे लोग सुसमाचार को अस्वीकार कर सकते हैं क्योंकि वह उनकी संस्कृति के लिए खतरा है (पृ. २१३)।
११) "निष्पक्ष सांस्कृतिक रूप" और "दुष्ट सांस्कृतिक रूप" में क्या अंतर है (पृपृ. २१५,२१६)?
१२) यह क्यों सच है कि कुछ हद तक, कलीसिया को संस्कृति बदलनी चाहिए? (पृ. २१६)

वैश्विक नियोग III

टिप्पणियाँ -

विश्व सेवा-नियुक्त कार्य पाठ्यक्रम की श्रृंखलाएं:

विश्व सेवा-नियुक्त कार्य श्रृंखला में तीन पाठ्यक्रम हैं। वे जोनाथन लुईस द्वारा संपादित श्रृंखला पर आधारित और अनुकूलित हैं। यह श्रृंखला स्पेनिश में उपलब्ध है और इसे विलियम कैरी लाइब्रेरी पब्लिशर्स, पी.ओ. बॉक्स ४०१२९, पासाडेना, सीए ९१११४ (८१८-७९८-०८१९) से मँगवा सकते हैं। ये सामग्रियाँ "अनुमति द्वारा उपयोग की गई" हैं।

तीन विश्व सेवा-नियुक्त कार्य पाठ्यक्रम:

१. विश्व सेवा-नियुक्त कार्य I - बाइबल/ऐतिहासिक आधार

२. विश्व सेवा-नियुक्त कार्य II - सामरिक पहलू

३. विश्व सेवा-नियुक्त कार्य III - विभिन्न-सांस्कृतिक पहलू[1]

I. वैश्विक नियोग और संस्कृति।

क. पाठ्यक्रम परिचय।

१. इस श्रृंखला के पहले दो पाठ्यक्रमों में हमने वैश्विक नियोग के धर्मवैज्ञानिक, ऐतिहासिक और रणनीतिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया है। इस पाठ्यक्रम में, हम वैश्विक नियोग के विभिन्न-सांस्कृतिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। पहले हमें यह पूछना चाहिए, संस्कृति क्या है?

क. संभवतः, "संस्कृति" की सबसे मूलभूत परिभाषा है "जिस प्रकार से लोगों का एक समूह अपने संसार को व्यवस्थित करता है।"

ख. "संस्कृति" लोगों के समाज के उन पहलुओं (विश्वासों, मूल्यों, परंपराओं और संस्थानों) के लिए एक सामान्य शब्द है जो लोगों को एक साथ बांधते हैं और उन्हें एक समान पहचान देते हैं।

२. वैश्विक नियोगकर्त्ता को संस्कृति का छात्र होना चाहिए। उसे संस्कृति और विभिन्न-सांस्कृतिक संचार की गतिशीलता और महत्व को समझना चाहिए।

क. जिन लोगों तक आप पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं, उनके साथ पहचान बनानी आवश्यक है।

ख. लोगों के साथ पहचान बनाने के लिए यीशु हमारे आदर्श हैं (इब्रा. २:१७)।

१) पहचान का परिणाम उन लोगों के लिए तरस और समझ लता है जिनमें आप सेवा कर रहे हैं (इब्र ४:१५ देखें)।

२) तरस और समझ का परिणाम मित्रता और संबंध है (इब्रा. ४:१६ देखें)।

टिप्पणियाँ -

ख. सांस्कृतिक पहचान।

१. दो चरम दृष्टिकोण।

क. सांस्कृतिक श्रेष्ठता (प्रजातिकेंद्रिकता के नाम से जानी जाती है)।

१) मेरी संस्कृति इन लोगों की संस्कृति से श्रेष्ठ है। मुझे इन लोगों को अपनी संस्कृति के अनुसार जीना सिखाना चाहिए।

२) उत्तर अमरिकी वैश्विक नियोगियों ने सदियों से यह गलती की है।

ख. सांस्कृतिक अस्वीकृति।

१) मुझे अस्वीकार करना चाहिए कि मैं कौन हूँ और उनमें से एक बन जाना चाहिए। मेरा लक्ष्य हर चीज़ में बिल्कुल इन लोगों के समान जीना है।

२) यह त्रुटि आंतरिक संघर्ष का कारण बनेगी, क्योंकि हम कुछ अन्य होने का नाटक करके इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि हम कौन हैं।

२. एक संतुलित नमूना (यीशु)।

क. यीशु एक संतुलित "पहचान" को दर्शाते हैं।

१) उन्होंने पूरी रीति से मनुष्य के साथ पहचान की। वह हम में से एक बन गए।

२) हालाँकि, इसका अर्थ यह नहीं था कि उन्होंने यह अस्वीकार कर दिया कि वह कौन थे। उन्होंने अपने परमेश्वर होने को बनाए रखा।

ख. पहचान का लक्ष्य।

१) यह दूसरी संस्कृति के जीवन, रीति-रिवाजों, विश्वासों आदि की कदम दर कदम नकल करना नहीं है। संस्कृति के कुछ पहलुओं की नकल करना एक तरीका हो सकता है, परन्तु लक्ष्य यह नहीं है।

२) लक्ष्य दूसरी संस्कृति के साथ संचार में प्रभावी होना है। यह दूसरी संस्कृति से संबंधित होना है ताकि आप उसके भीतर संवाद कर सकें।

क) इसमें मेजबान संस्कृति को अपनाना सम्मिलित है।

ख) इसमें आप कौन हैं या आपके जीवन में अपनी संस्कृति की वास्तविकता और महत्व की अस्वीकृति सम्मिलित नहीं है।

टिप्पणियाँ -

३. पहचान के विषय में व्यावहारिक अंतर्दृष्टि।

क. आप इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि आप कौन हैं और न ही आपको ऐसा करना चाहिए। यद्यपि यीशु ने मानवजाति के साथ अपनी पहचान बनाई और हमारे जैसे बन गए, उन्होंने यह छिपाने का प्रयास नहीं किया कि वह कौन थे। उन्होंने कई अलग-अलग तरीकों से दिखाया कि वह परमेश्वर थे। एक अन्य "संस्कृति" के साथ अपनी पहचान बनाने में उन्होंने अपनी "संस्कृति" से इनकार नहीं किया।

ख. साथ ही, हमें अपनी संस्कृति को लक्ष्य वाली संस्कृति में संपर्क बिंदु खोजने से रोकने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

१) यह दूसरों के लिए आड़ नहीं बनना चाहिए, जो उन्हें यीशु को स्वीकार करने से रोके। यीशु ही एकमात्र आड़ होने चाहियें। हमारा सुसमाचार को प्रस्तुत करने का तरीका, स्वयं सुसमाचार के मार्ग में आड़ नहीं बनना चाहिए।

२) एक वैश्विक नियोगकर्त्ता को लोगों के साथ अपनी पहचान बनानी चाहिए क्योंकि एक वैश्विक नियोगकर्त्ता को पता लगाना चाहिए कि सांस्कृतिक रूप में मेल खाते तरीके से सुसमाचार को कैसे प्रस्तुत किया जाए।

ग. आदत की शक्ति किसी के लिए अपनी मूल संस्कृति को अस्वीकार करना कठिन बना देगी। अधिकतर चीजें जो हम करते हैं वह अनजाने में की जाती है।

लेखक का उदाहरण:

एक यूरोपीय उस भारतीय के समान नहीं चल सकता जिसकी पीठ पर भारी भोज ढोना कई वर्षों से चल रहा है। यूरोपीय के लिए यह सोचना आवश्यक नहीं है कि उसे भारतीय के समान चलना चाहिए।

अपना उदाहरण लिखें:

१) पहचान के एक अप्राकृतिक दृष्टिकोण को थोपने का प्रयास करने की समस्या यह है कि यह वास्तविक नहीं है और यह सुसमाचार के अनुरूप नहीं है। सुसमाचार वास्तविकता और सच्चाई का सुसमाचार है। पहचान के विवश, चरम और अस्वाभाविक रूप अवास्तविक और झूठे हैं।

२) पहचान की कुछ सीमाएं हैं जिन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। वैश्विक नियोगकर्त्ता इन सीमाओं की वास्तविकता को नकारकर सुसमाचार के प्रसार के लिए अच्छा नहीं करता।

टिप्पणियाँ -

३) कुंजी यह स्वीकार करते हुए लोगों से संबंधित होना है कि आप अलग हैं और यह बदलेगा नहीं, और न ही इसे बदलने की आवश्यकता है।

क) इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उन क्षेत्रों में स्वयं को मार नहीं सकते हैं जहाँ हम लोगों तक सुसमाचार पहुँचाने के लिए चीजों को अलग तरीके से करने में सक्षम हैं। वास्तव में, इसका अर्थ यह है कि हम लोगों से संबंधित होने के उद्देश्य से चीजों को अलग रीति से करने को तैयार होंगे। यह इच्छा कई अलग-अलग क्षेत्रों (भोजन, कपड़े, परिवहन, आवास, आदि) में आ सकती है।

ख) पहचान का लक्ष्य एक महान अभिनेता बनना नहीं है। यह इस बात के बीच संचार और संबंध के लिए एक वातावरण तैयार करना है कि आप कौन हैं, न कि इस बात को नकारने के बीच कि आप कौन हैं।

घ. पौलुस ने १ कुरिं. ९:२२, २३ में पहचान के विषय में लिखा।

१) पौलुस ने सुसमाचार के लिए दूसरों के साथ अपनी पहचान बनाई। उन्होंने अपनी संस्कृति को आड़ नहीं बनने दिया। उन्होंने स्वयं को मार कर और दूसरों के साथ अपनी पहचान बना कर, इस प्रकार के तर्कों और बाधाओं को नष्ट कर दिया (२ कुरिं. १०:५) ।

२) इसका अर्थ यह नहीं है कि पौलुस एक महान अभिनेता थे। इसका यह अर्थ नहीं कि वे भेष बदलने में निपुण बन गए। पौलुस गंभीर थे।

३) उन्होंने अपने "अधिकारों" को छोड़ने हेतु तैयारी की चुनौती को स्वीकार करते हुए इस तथ्य को स्वीकार किया कि वह पौलुस थे (१ कुरिं. ९:४-६, १२, १८)।

४) पहचान की चुनौती दूसरों को धोखा देने की क्षमता पर आधारित नहीं है, परन्तु स्वयं को मारने की क्षमता पर आधारित है।

टिप्पणियाँ -

ग. संस्कृति को समझना।

१. संस्कृति के स्तर।

क. संस्कृति का सबसे स्पष्ट (और सतही) स्तर **स्वभाव** है।

१) लोग क्या करते हैं? वे कैसे कार्य करते हैं?

२) वे चीजों को कैसे करते हैं, इसके संबंध में कौन से प्रतिमान देखे जा सकते हैं?

ख. संस्कृति का अगला स्तर लोगों के **मूल्यों** द्वारा दर्शाया जाता है।

१) लोगों को क्या अच्छा या लाभदायक लगता है?

२) उन्हें सबसे अच्छा क्या लगता है?

३) उन्हें क्या लगता है कि क्या किया जाना चाहिए?

ग. संस्कृति का अगला स्तर लोगों के **विश्वासों** द्वारा दर्शाया जाता है। वे पूछते हैं, "सच क्या है?"

घ. संस्कृति का सबसे गहरा स्तर लोगों का **विश्व दृष्टिकोण** है। वे पूछते हैं, "असली क्या है?"

लेखक का उदाहरण:

एक व्यक्ति जिसके विश्व दृष्टिकोण में यह विश्वास सम्मिलित है कि मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है, वह यह विश्वास करेगा कि मृत्यु के बाद परमेश्वर द्वारा कोई न्याय नहीं किया जाता। यह सुखवादी (बहुत आनंद उन्मुख) मूल्यों को जन्म दे सकता है, जो सुखवादी गतिविधियों को जन्म देगा।

अपना उदाहरण लिखें:

वैश्विक नियोग III

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

संस्कृति के विभिन्न स्तरों को समझाने में सहायता के लिए निम्नलिखित आरेख २ का प्रयोग करें। ध्यान दें कि प्रत्येक स्तर पिछले स्तर को कैसे प्रभावित करता है।

उदाहरण दें कि किसी व्यक्ति के कुछ विश्वासों में उसके विश्व दृष्टिकोण का परिणाम कैसे होगा। उस व्यक्ति के विश्वास कुछ मूल्यों की ओर ले जाएंगे और वे मूल्य उस व्यक्ति के व्यवहार या कार्यों का निर्माण करेंगे।

इस प्रगति की समझ कैसे एक वैश्विक नियोगकर्त्ता को सुसमाचार को अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में सहायता कर सकती है?

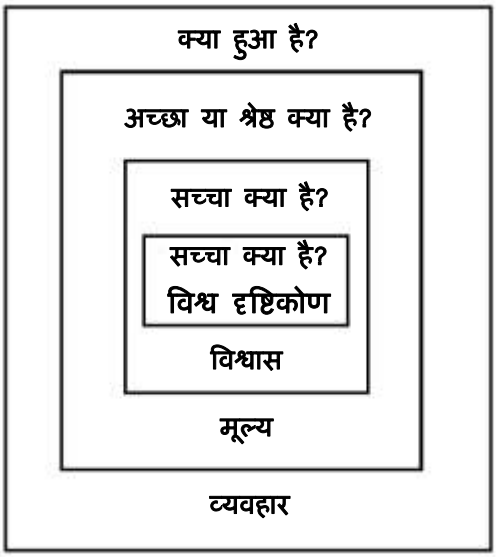

टिप्पणियाँ -

२. विभिन्न-सांस्कृतिक मतभेद।

क. सांस्कृतिक अंतर के निम्नलिखित सामान्य उदाहरण पर विचार करें।

लेखक का उदाहरण:

एक उत्तर अमरिकी सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता को बताया गया कि एक सभा सुबह ९:०० बजे है। वह सुबह ९:०० बजे आता है।

सभा का आयोजन करने वाले अर्जेंटीना के अगुवे १०:०० बजे पहुँचते हैं। वे "देर से" आने के लिए क्षमा नहीं माँगते क्योंकि उनकी संस्कृति में उन्हें देर नहीं हुई है।

अपना उदाहरण लिखें:

ख. सांस्कृतिक मतभेद कैसे एक वैश्विक नियोगकर्त्ता के काम को प्रभावित कर सकते हैं? वैश्विक नियोगकर्त्ता सांस्कृतिक मतभेदों के साथ कैसे तालमेल बिठा सकते हैं? सांस्कृतिक गलतफ़हमियों से कैसे बचा जा सकता है?

३. सांस्कृतिक धक्का (कुंठा)।

क. सांस्कृतिक धक्का तब होता है जब किसी व्यक्ति को पता चलता है कि उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि उसके नए अस्त से मेल नहीं खाती है। वह एक बच्चे के समान महसूस करने लगता है जिसे सबसे मूलभूत चीजें (भाषा, उचित शिष्टाचार, रीति-रिवाज, आदि) सीखनी चाहिए।

१) एक अनजान होने का दैनिक तनाव और सब कुछ से अपरिचित होने का कुंठा, वैश्विक नियोगकर्त्ता को नई जगह में रहने के पहले महीने के बाद नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

२) उसे एहसास होता है कि उसे अपनी जीवन शैली के कई पहलुओं को फिर से सीखना चाहिए और उसे लंबे समय तक इस "अलग तरीके" से जीना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

ख. पर्यटकों को दो कारणों से सांस्कृतिक धक्के का अनुभव नहीं होता है।

१) नई चीजों, लोगों और स्थानों का अनुभव करने में उत्साह और रोमांच होता है। प्रारंभ में, परिवर्तनों को सकारात्मक रूप से माना जाता है।

२) यह सोच हमेशा बनी रहती है कि वे केवल घूमने आएं हैं। उन्हें संस्कृति की जीवन शैली में समायोजित होने की आवश्यकता नहीं है। इस अर्थ में, अल्पकालिक वैश्विक नियोगियों को सावधान रहना चाहिए। वे सरलता से एक गलत धारणा प्राप्त कर सकते हैं कि एक वैश्विक नियोगकर्त्ता होना कैसा होता है।

ग. सांस्कृतिक धक्के का इलाज।

१) संस्कृति से बचना सही समाधान नहीं है।

क) अपनी संस्कृति को छिपाना और बदलना गलत होगा।

ख) हालाँकि, अपनी संस्कृति की भावना को बनाए रखना फायदेमंद, आवश्यक और बुद्धिमानी है, वैश्विक नियोगकर्त्ता को मेजबान संस्कृति से बचना नहीं चाहिए।

२) इसका समाधान संस्कृति का अनुभव करने और उसे अपनाने के लिए स्वयं को चुनौती देना है।

क) वैश्विक नियोगकर्त्ता को लचीला होना चाहिए।

ख) उसे चीजों को करने के विभिन्न तरीकों को स्वीकार करने और अभ्यास करने के लिए पर्याप्त विनम्र होना चाहिए।

४. सुसमाचार और संस्कृति।

क. अतीत में, संस्कृति को "मूल निवासियों" पर थोपने का प्रयास करने की गलती की गई है। वैश्विक नियोगियों को बाइबल के सुसमाचार का न कि अपनी संस्कृति के सुसमाचार का प्रचार करने में सावधानी बरतनी चाहिए।

१) फिर से, "आड़" (अपनी संस्कृति को आड़ न बनने देना) के विचार पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

२) मसीहियत की अस्वीकृति वास्तव में विदेशी संस्कृति की अस्वीकृति हो सकती है, यदि सुसमाचार को संदर्भित नहीं किया गया है।

टिप्पणियाँ -

ख. वैश्विक नियोग कर्त्ता को समन्वयवाद और स्वदेशीकरण के बीच के अंतर को समझना चाहिए।

१) समन्वयता मसीहियत को दिखाने के लिए एक सांस्कृतिक रूप का उपयोग करता है, जबकि इसके पूर्व संबंधित विश्वास को बनाए रखता है। यह स्वीकार्य नहीं है।

२) स्वदेशीकरण स्वीकार्य है। नए मसीही सांस्कृतिक रूप का उपयोग करते हुए पुराने विश्वास को नकारते हैं। वे एक नए मसीही रूप का उपयोग करने और पुराने विश्वास को बनाए रखने के विरोध में पुराने सांस्कृतिक सांचे को नए मसीही विश्वासों से भर देते हैं।

ग. जीवन परिवर्तन के अनपेक्षित परिणामों के प्रति वैश्विक नियोगकर्त्ता को संवेदनशील होना चाहिए।

लेखक का उदाहरण:

एक सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता क्या कर सकता है जब नए अफ्रीकी मसीही अपने गाँव को स्वच्छ नहीं करते क्योंकि कचरा फेंकने के लिए उनका मूल प्रोत्साहन (यह सोच कि दुष्ट आत्माएं कचरे में छिपती हैं) अब अस्तित्व में नहीं हैं?

जहाँ बहुविवाह का प्रचलन है, वहाँ एक सेवा-नियुक्त कार्यकर्त्ता क्या कर सकता है? उन तीन पत्नियों का क्या होगा जिन्हें एक नए मसीही को त्यागने का आदेश दिया गया है? कई समाजों में वे गुलाम या वेश्या बन जाएंगी या मार दी जाएंगी।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

कई बार इन स्थितियों के उत्तर प्रतिस्थापन या पुनर्स्थापन के सिद्धांत में मिल जाते हैं। सांस्कृतिक विकल्प को बदली गई या समाप्त सांस्कृतिक अभ्यास द्वारा छोड़ी गई खाली जगह को भरना होगा।

आप इस सिद्धांत को ऊपर दिए गए दो उदाहरणों पर कैसे लागू कर सकते हैं?

टिप्पणियाँ -

घ. वैश्विक नियोगी: परिवर्तन का कारक।

१. वैश्विक नियोगी की शक्ति, किसी भी अन्य वैचारिक शक्ति के समान, एक संस्कृति में परिवर्तन उत्पन्न करेगी।

क. अतीत में वैश्विक नियोगियों ने सकारात्मक शैक्षिक और चिकित्सा प्रथाओं के साथ-साथ सहायक नई तकनीकों को प्रस्तुत किया है।

ख. उन्होंने नरभक्षण, विधवा को जलाने, बच्चों की हत्या, दासता और आदिवासी युद्ध जैसी नकारात्मक प्रथाओं को समाप्त करने में भी सहायता की है।

२. मसीहियत अपने मूल और सच्चाई में "उत्कृष्ट सांस्कृतिक" (यह संस्कृति से कहीं बढ़कर) है। यह संस्कृति से परे है।

क. हालाँकि, मसीहियत का अनुप्रयोग संस्कृति के भीतर किया जाता है।

ख. इस प्रकार, सुसमाचार संदेश हमेशा संस्कृति को बदलेगा क्योंकि यह उन लोगों को बदल देता है जो तब संस्कृति के भीतर अपनी मसीहियत को जीते हैं।

ग. वैश्विक नियोगी की कुंजी यह है कि वह सुसमाचार को संस्कृति को बदलने की अनुमति दें, न कि अपनी संस्कृति को लोगों पर थोपें।

II. पालनहार बनना।

क. परमेश्वर का संचारक।

१. धन, संपत्ति और जीवन शैली के प्रति हमारा रवैया हमारी सेवकाईयों को प्रभावित करेगा क्योंकि वह रवैया दूसरों के प्रति हमारे विश्वासों का संचार करेगा।

क. एक वैश्विक नियोग को इस बात पर विचार करना चाहिए कि उच्च जीवन प्रतिष्ठा उन लोगों को क्या बताती है जिनमें वह सेवकाई करते हैं।

ख. 'जीवन स्तर' का मुद्दा पहचान की अवधारणा को कैसे प्रभावित करता है? यह सुसमाचार की प्रस्तुति को कैसे प्रभावित करता है?

२. परमेश्वर के संचारक को लचीला होना चाहिए। उसे संदेश को विभिन्न स्थितियों के अनुकूल बनाने में सक्षम होना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

३. संचार की भूमिकाएं।

क. दूसरों के साथ अपने संचार में एक विशिष्ट वैश्विक नियोगी का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है:

१) शिक्षक।

२) विक्रेता।

३) दोष लगाने वाला

ख. वैश्विक नियोग के लिए इन भूमिकाओं को ग्रहण करना अधिक प्रभावी है:

१) सीखने वाला।

२) व्यापारी।

३) कहानी सुनाने वाला।

ख. संबंध।

१. अपनेपन की भावना स्थापित करना।

क. नए देश में पहले महीने महत्वपूर्ण होते हैं।

लेखक का उदाहरण:

जब एक बच्चा पैदा होता है तो वे अपने आस-पास के विषय में विशेष रूप से जागरूक होते हैं। बच्चा जीवन के उन पहले घंटों और दिनों से बहुत प्रभावित होगा। यह बच्चे और माता-पिता के बीच संबंध का एक महत्वपूर्ण समय होता है।

वैश्विक नियोगी के लिए भी यही सच है। एक नया वैश्विक नियोगकर्त्ता अपने पहले कुछ सप्ताहों में जिस स्थिति में काम पर होता है, वह उस देश में उनके पूरे रहने को प्रभावित करेगा। यह वैश्विक नियोग और उन लोगों के बीच संबंध बनने का एक महत्वपूर्ण समय होता है, जिनमें वे सेवा करेंगे।

दुर्भाग्य से, जैसा कि पश्चिमी अस्पतालों में बच्चों के जन्म के समय होता है, नए आए हुए को अक्सर नए परिवार से अलग कर दिया जाता है।
शिशुओं के मामले में, उन्हें नर्सरी में रखा जाता है।

वैश्विक नियोगियों के मामले में, उन्हें अन्य वैश्विक नियोगियों के घर में रखा जाता है। यह महत्वपूर्ण और प्रभावशाली समय खो जाता है।

टिप्पणियाँ -

ख. उस नए वैश्विक नियोगी के पास अनेक लाभ होते हैं, जिसे नई संस्कृति से तुरंत परिचित कराया जाता है।

१) जब वे पहली बार आते हैं तो वे संस्कृति में स्वयं को विसर्जित करने के लिए विशिष्ट रूप से तैयार होते हैं। संस्कृति के साथ उनका पहला अनुभव सकारात्मक होगा। यह संस्कृति के प्रति उनके रवैये को प्रभावित करेगा।

२) जब वे आते हैं तो वे सीखने के लिए विशेष रूप से तैयार होते हैं। यदि वे एक स्थानीय परिवार के साथ रहते हैं, तो उन्हें संस्कृति का अध्ययन करने, निरीक्षण करने, सीखने और अभ्यास करने का अवसर मिलेगा। यह नई संस्कृति में जल्दी और प्रभावी ढंग से घुलने की उनकी क्षमता को प्रभावित करेगा।

३) संबंध संस्कृति के धक्के को कम करेगा क्योंकि वैश्विक नियोगी अपने और नई संस्कृति के बीच अलगाव को कम महसूस करेगा।

४) संबंध के परिणामस्वरूप सेवकाई के लिए तत्काल अवसर मिलेगा।

क) भाषा सीखने को एक अलग कार्य बनाने के बजाय वैश्विक नियोगकर्त्ता भाषा सीख सकते हैं और सेवकाई कर सकते हैं।

ख) यह प्राकृतिक भाषा सीखने की प्रक्रिया से मेल खाता है। यह एक शैक्षिक प्रक्रिया से अधिक एक सामाजिक प्रक्रिया है।

ग. लोगों के साथ रहना लोगों को जानना है। लोगों को जानना लोगों के बीच बेहतर सेवकाई करने में सक्षम होना है।

१) लोगों के साथ न रहने के लिए बहुत से बहाने और स्वयं को ठीक ठहराना है।

२) हालाँकि, अंत में फलों के द्वारा हमारे सेवकाई के तरीके जाने जाएंगे। एक वैश्विक नियोगी जो उन लोगों से घनिष्ठता से जुड़ा नहीं है जिनमें वह सेवा कर रहा है, वह उन लोगों में सेवकाई नहीं कर पाएगा। उसे बहिष्कृत किया जाएगा और वह उन्हें बहिष्कृत कर देगा।

३) निसंदेह, इस प्रकार के रूप धारण वैश्विक नियोगकर्त्ता का हमारा उदाहरण स्वयं यीशु मसीह है।

क) यीशु अपनी इच्छानुसार कोई भी जीवन शैली जी सकते थे, परन्तु उन्होंने एक गरीब, सामान्य, बढ़ई के बेटे के रूप में आने का विकल्प चुना। वह मनुष्यों के साथ रहते थे। उन्होंने स्वयं को मनुष्यों से अलग नहीं किया।

ख) यूह. १:१४ के सभी तात्पर्यों पर ध्यान दें।

टिप्पणियाँ -

ग. भाषा अधिग्रहण बनाया व्यावहारिक [लैंगुएज एक्यूज़ीशन मेड प्रैक्टिकल (LAMP)]।

१. टॉम और एलिजाबेथ ब्रूस्टर (वैश्विक नियोगी प्रशिक्षक) ने भाषा सीखने के लिए एक प्रमाणित विधि विकसित की है। LAMP का दावा है कि यदि निम्न तीन नियमों का पालन किया जाए तो कोई भी भाषा सीख सकता है:

क. आप वहाँ रहें जहाँ भाषा बोली जाती है।

ख. आप नई भाषा सीखने के लिए प्रेरित हों।

ग. आप जानते हों कि भाषा सीखने के साथ कैसे आगे बढ़ना है, धीरे-धीरे और दिन-दिन करके।

२. भाषा सीखना बहुत प्राकृतिक है। बच्चे बिना किसी पाठ्यक्रम पढ़े भाषा सीख जाते हैं!

क. भाषा सीखना जितना अधिक प्राकृतिक होता है, उतना ही आनंदमय होता है।

ख. हम बच्चे के रूप में सीखने के लिए जितना अधिक विनम्र होंगे, उतना ही हमारी भाषा सीखना प्राकृतिक होगा।

ग. जब हम वयस्क होते हुए व्यवस्थित होने में सक्षम होने के लाभों को बच्चे के समान नम्रता और सीखने की भूख के लाभों में जोड़ते हैं, तो हम भाषा सीखने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया का उपयोग कर सकते हैं।

घ. लोगों को कई चीजों में सहायता की आवश्यकता होती है, जैसे बच्चों की देखभाल करना। LAMP विधि में आपकी कमजोरी ही आपकी ताकत है। आप सरल तरीकों से दूसरों की सहायता करके सीख सकते हैं। आमतौर पर एक भाषा सहायक की आवश्यकता होती है।

१) दिन के लिए जो आपको चाहिए उसे **तैयार करें**।

२) आप जो तैयार करते हैं उसका **अभ्यास करें**।

३) जो आप जानते हैं उसका **संचार करें**।

४) अपनी आवश्यकताओं और अपनी प्रगति का **मूल्यांकन करें** ताकि आपको पता चले कि अगले दिन के लिए क्या तैयारी करनी है।

टिप्पणियाँ -

३. **तैयारी करें।**

क. अपने भाषा सहायक से उस संदेश के वाक्यों को प्राप्त करें जिसका आप उस दिन अभ्यास करना चाहते हैं।

ख. अपने सहायक से आपके उच्चारण का मूल्यांकन करने के लिए कहें।

ग. संदेश को एक स्मरण पुस्तक में, या कार्ड पर लिखें।

घ. उस समझें जो आप बोल रहे हैं।

४. **अभ्यास करें।**

क. अपने भाषा सहायक को सुनें जब वह उस दिन के संदेश के शब्द बोलते हैं।

ख. अपने भाषा सहायक की नक़ल करें। उसे आपकी गलतियों को सुधारने दें। नक़ल करें, नक़ल करें, नक़ल करें!

ग. स्मृति द्वारा स्वयं संदेश को तैयार करें।

५. **बातचीत करें।**

क. उन लोगों और स्थितियों को खोजें जिनमें आप संदेश बोल सकते हैं।

ख. रचनात्मक बनें। बाज़ार जाएं। किसी गली में चले जाएं। जाएं किसी पड़ोसी से मिलें।

ग. अधिकतर बार, लोग समझेंगे कि आप क्या कर रहे हैं और आपकी बात सुनने को तैयार होंगे।

६. **मूल्यांकन करें।**

क. उन समस्याओं को लिख लें जो आपके पास हैं।

ख. विचार करें कि आप प्रक्रिया को और अधिक रोमांचक, प्राकृतिक और मजेदार कैसे बना सकते हैं।

टिप्पणियाँ -

७. भाषा अधिग्रहण सारांश।

क. प्रत्येक व्यक्ति अलग है। भाषा सीखने के कई अलग-अलग सफल तरीके हैं। LAMP के सिद्धांत आवश्यकतानुसार अन्य विधियों के साथ जुड़ सकते हैं।

ख. एक व्यक्तिगत उदाहरण। एक वैश्विक नियोगकर्त्ता ने चार महीने के अध्ययन के बाद लिंगाला (एक अफ्रीकी जनजातीय भाषा) में प्रचार करना और पढ़ाना आरम्भ कर दिया। उन्होंने ऐसा स्पेनिश के साथ भी किया। निम्नलिखित चरणों की एक सामान्य सूची है जिसका उपयोग किया जा सकता है।

१) **तैयारी करें।**

क) भाषा के लिए एक शब्दकोश लें। किसी भी भाषा में सबसे अधिक प्रयोग होने वाले १००० शब्दों की सूची बनाएं।

ख) क्रियाओं और "जोड़नेवाले शब्दों" (वे शब्द जो वाक्यों को जोड़ते हैं, ऐसे शब्द जो परिवर्तन करते हैं जैसे "और", "परन्तु", "भी", आदि) पर ध्यान दें।

ग) शब्दकोश में शब्दों को समझने में आपकी सहायता करने के लिए किसी को खोजने का प्रयास करें। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह व्यक्ति आपकी सूची की जाँच कर सकते हैं ताकि आप कुछ गलत सीखने में समय बर्बाद न करें।

एक साधारण स्मृति का अभ्यास:

छोटे नोट कार्ड सबसे प्रभावी होते हैं। नोट कार्ड के ऊपरी भाग पर नई भाषा का शब्द और निचले भाग पर उससे संबंधित अपनी भाषा का शब्द लिखें। यदि आप छोटे नोट कार्ड का उपयोग करते हैं तो आप उन्हें कहीं भी सरलता से अपने साथ ले जा सकते हैं।

अपनी भाषा के संबंधित शब्द को छिपाते हुए नया शब्द देखें। नया शब्द बोले और स्मरण रखने का प्रयास करें कि उसका क्या अर्थ है। अब अर्थ को देखकर और नए शब्द को स्मरण करने का प्रयास करके इस प्रक्रिया को उल्टा कर दें।

प्रत्येक सप्ताह **१००** शब्दों को याद करने और बातचीत या वाक्यों में उपयोग करने का लक्ष्य निर्धारित करें। ये छोटे शब्द और वाक्य हो सकते हैं।

टिप्पणियाँ -

२) **अभ्यास करें।**

क) प्रत्येक सप्ताह १०० शब्दों या वाक्यों को याद रखने और बातचीत में उपयोग करने का लक्ष्य निर्धारित करें। ये छोटे शब्द और वाक्य हो सकते हैं।

ख) प्रतिदिन २० शब्द सीखें। समीक्षा के लिए सप्ताहांत का उपयोग करें।

ग) एक व्याकरण पुस्तक लेने का प्रयास करें और/या किसी ऐसे व्यक्ति से मूलभूत निर्देश प्राप्त करें जो दोनों भाषाओं को जानता हो। क्रिया संयोग और संज्ञा अंत पर ध्यान दें। व्याकरण का अभ्यास करने के लिए उस शब्दावली का प्रयोग करें जिसे आप पहले ही सीख चुके हैं।

घ) एक "बहुत अच्छा" शिक्षक खोजने से सावधान रहें, सिद्धता कभी भी उद्देश्य नहीं है, पर संदेश का संचार करना है। कोई भी कभी भी एक बच्चे के सिद्ध होने की अपेक्षा नहीं करता - यह एक प्रक्रिया है।

३) **बातचीत करें।**

क) भाषा हेतु अपना साथी बनने के लिए किसी स्थानीय व्यक्ति को नियुक्त करें। दो महीने की समय-सारणी तैयार करें जिसमें दिन के ४-६ घंटे तक एक साथ रहना सम्मिलित हो। आपने जो भी सीखा है उसका अपने साथी के साथ बातचीत करने के लिए उपयोग करें।

ख) रहस्य विविधता है। उपयोग करने हेतु विभिन्न खेलों, अभ्यासों, गतिविधियों आदि के विषय में सोचने में रचनात्मक होने के लिए परमेश्वर से आपकी सहायता करने के लिए कहें। यदि आप विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का उपयोग नहीं करते हैं तो आप जल्द ही ऊब और हताश हो जाएंगे। यहाँ कुछ विचारों की एक सूची है।

वैश्विक नियोग III

लेखक का सुझाव:

- विभिन्न स्थानों पर जाएं और जो आप देखते हैं उसका वर्णन करें। अपने साथी को समझाएं कि आप क्या देख रहे हैं।
- एक साथ बाइबल का अध्ययन करें।
- "टेलीफोन" खेलें (दिखावा करें कि आप फोन पर बात कर रहे हैं)।
- बाइबल की कहानियों का नाटक करें।
- प्रसिद्ध लोगों के साथ काल्पनिक साक्षात्कार करें।
- विभिन्न प्रकार के लोगों की "भूमिका निभाना" करें।
- "रिक्त स्थान भरें" खेलें।
- "कहानी जारी रखें" खेलें। एक व्यक्ति कहानी सुनाना आरम्भ करता है। दूसरा व्यक्ति उसे वहीं से जारी रखता है जहाँ कहानी रुकी थी।
- "दुकान" या "बैंक" या "स्कूल" खेलें।
- "बाइबल में से एक पद्य का अनुमान लगाना" खेलें।
- बाइबल के विभिन्न विषयों पर छोटा उपदेश दें।
- "अनुवादक" खेलें। एक व्यक्ति एक भाषा में बोलता है और दूसरा व्यक्ति अनुवाद करता है। भूमिका और भाषा बदलें (यह केवल तभी किया जा सकता है यदि आपका साथी आपकी भाषा जानता हो)।
- गिनती करने वाले और वह खेल खेलें जिनमें आप सूचियाँ बनाते हैं।
- "शिमोन कहते हैं" (नकल करने का खेल) खेलें।
- टेलीविजन खेल प्रदर्शन खेलें।
- "चाराड्स" खेलें।
- "दिखाना और बताना" खेलें।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ -

टिप्पणियाँ -

४) **मूल्यांकन करें।**

क) आपका अभ्यास समय कैसे अधिक प्रभावी हो सकता है?

ख) एक साथी के साथ बातचीत का कौन सा अभ्यास सबसे प्रभावी लगता है? सबसे मजेदार कौन से हैं?

ग) अपने साथी के साथ दो महीने के बाद, एक मूलभूत प्रचार या शिक्षा लिखें और उसे प्रस्तुत करें। उसे कठिन शब्दों और वाक्यों में आपकी सहायता करने दें।

लेखक की टिप्पणी:

चार चरणों का पालन करने के बाद (तैयार करें, अभ्यास करें, बातचीत करें और मूल्यांकन करें), आपको स्थानीय भाषा में पढ़ाने और प्रचार करने का प्रयास करना चाहिए। इसके पहले दो महीने कठिन और हताश भरे होते हैं। आप अपनी बातचीत में सीमित होने की हताशा महसूस करेंगे।

कठिनाई के क्षेत्रों की सूची बनाएं:

आपको कौन सा शब्द नहीं पता था?

आप लगातार कौन सी व्याकरण संबंधी गलती करते हैं?

समस्या क्षेत्रों में अपने साथी के साथ अभ्यास करें। अपनी शब्दावली बढ़ाएं। अपने व्याकरण में सुधार करें। भाषा में लगातार दो महीने की शिक्षा देने और प्रचार के बाद आपको भाषा के साथ एक महत्वपूर्ण स्वतंत्रता का अनुभव करना आरम्भ कर देना चाहिए।

लक्ष्य चार महीने के बाद प्रचार करना और पढ़ाना आरम्भ करना है और छह महीने के बाद एक महत्वपूर्ण स्वतंत्रता महसूस करना है।

वैश्विक नियोग III

III. संचार की कुंजियाँ।

टिप्पणियाँ -

क. अंतर-सांस्कृतिक संचार। संचार में संस्कृति की भूमिका।

१. आधुनिक संसार में सुसमाचार के लिए बहुत कम भौतिक बाधाएं हैं। हालाँकि, बहुत सारी सांस्कृतिक बाधाएं हैं।

२. वैश्विक नियोगी एक द्वितीयक स्रोत है। वह प्रेरित यूहन्ना के शब्दों को नहीं कह सकता (१ यूहन्ना १:१, २)। वह बीच में खड़ा होता है। उसे अवश्य बाइबल से संदेश लेना है जो विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों सहित अस्तित्व में है, और उसका दूसरी संस्कृति में प्रचार करना है। यह बहुत कठिन है।

३. जो बात इसे और भी कठिन बनाती है, वह यह है कि दोनों संस्कृतियों में से कोई भी (विशेष रूप से बाइबल में दिए गए गद्यांश वाली और जिसमें वैश्विक नियोगी जाता है) उसकी अपनी नहीं है।

४. वैश्विक नियोगी को अवश्य एक संस्कृति से संदेश लेना है और अपनी संस्कृति को संदेश को विकृत करने की अनुमति दिए बिना उसका दूसरी संस्कृति में प्रचार करना है। वह तीन संस्कृतियों के बीच काम करता है।

क) इस प्रकार, वैश्विक नियोगी को पहले बाइबल का छात्र होना चाहिए। बाइबल की सही व्याख्या करने के लिए उसे बाइबल संस्कृति का छात्र होना चाहिए।

ख) वैश्विक नियोगकर्त्ता को अपनी संस्कृति का छात्र होना चाहिए। उसे सीखना चाहिए कि दूसरों तक संदेश कैसे पहुँचाया जाना है।

ग) वैश्विक नियोगकर्त्ता को अन्य संस्कृतियों का छात्र होना चाहिए। उसे यह सीखना चाहिए कि संस्कृतियों के बीच संदेश का संचार कैसे करना है। इस तीसरे चरण में सफलता की कुंजी संस्कृति को जानना है। वैश्विक नियोगी को लोगों और उनके सोचने के तरीके को अच्छी रीति से जानना चाहिए।

ख. बाकी संसार को देखना।

१. विश्व दृष्टिकोण और संदर्भीकरण।

क. 'विश्व दृष्टिकोण' वह तरीका है जिससे लोग वास्तविकता को जान पाते हैं। सन्दर्भीकरण एक संदेश का इस प्रकार से संचार या प्रकट करने की प्रक्रिया है जो एक विशेष संस्कृति से मेल खाए, और इसलिए उसके द्वारा समझे जाने और प्राप्त होने में सक्षम हो।

ख. क्योंकि दुनिया के विभिन्न दृष्टिकोण हैं, इसलिए सुसमाचार को संदर्भित करने के विभिन्न तरीके हैं। क्योंकि विभिन्न तरीके हैं जिनसे विभिन्न लोग चीजों को समझते हैं, इसलिए सत्य को प्रस्तुत करने के विभिन्न तरीके हैं।

टिप्पणियाँ -

२. संदेश को विश्व दृष्टिकोण के अनुकूल बनाना।

क. यीशु ने अपने संदेश को आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु और विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के कान खोलने के लिए अनुकूलित किया।

१) अमीर युवा शासक (लूका अध्याय १५) के मामले में, यीशु ने उसके साथ बातचीत की और उसे इस स्तर पर चुनौती दी कि वह निश्चित रूप से समझ सके। यीशु ने उनसे कहा कि जो कुछ उनके पास है उसे बेच दो और उनके पीछे हो लो।

२) सामरी स्त्री के मामले में (यूहन्ना अध्याय ४) कुएं पर यीशु ने जीवन के जल के संदर्भ में बात की थी।

३) नीकुदेमुस (यूहन्ना अध्याय ३) के मामले में, उन्होंने नए जन्म के विषय में बात की।

ख. पतरस और पौलुस दोनों ने अपनी प्रस्तुतियों को दुनिया के विशेष दृष्टिकोणों के अनुसार अनुकूलित किया, जिन्हें उन्होंने संबोधित किया था।

चर्चा विषय

पतरस के संदेशों की तुलना करें जो प्रेरितों २:१४-३६ और १०:३४-४३ में पाए जाते हैं।
क्या प्रस्तुतियाँ समान हैं?
वह किन दो अलग-अलग समूहों के लोगों से बात कर रहे थे?
पतरस दो समूहों के विभिन्न विश्व दृष्टिकोणों के प्रति कैसे संवेदनशील थे?
प्रेरितों १३:१६-४१ और १७:२२-३१ में दिए गए पौलुस के संदेशों की तुलना करें।
पौलुस के लिए उन्हीं तीन प्रश्नों पर विचार करें, जिनका उपयोग हमने पतरस के लिए किया था।

ग. वैश्विक नियोगी एक विश्व दृष्टिकोण से दूसरे विश्वदृष्टि में कैसे संचार कर सकते हैं?

१) वे अविश्वासियों को मसीही संदेश के विषय में निर्णय लेने हेतु मसीही दुनिया के दृष्टिकोण को अपनाने के लिए कह सकते हैं। यह बहुत वास्तविक विकल्प नहीं है। आमतौर पर ऐसा होता नहीं है।

२) वे अविश्वासी से "आधे रास्ते में मिलने" के लिए कह सकते हैं। वैश्विक नियोगी अपने विश्व दृष्टिकोण से बातचीत करते हैं जबकि वह सुनने वाले के विश्व दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हैं।

क) यह एक लोकप्रिय तरीका रहा है। इसमें "तुलनात्मक धर्मों" का अध्ययन सम्मिलित है और यह एक पुल के रूप में उसके उपयोग पर ध्यान केंद्रित करता है जो दो विश्व विचारों में समान होता है।

टिप्पणियाँ -

ख) यह अक्सर भ्रामक होता है क्योंकि कुछ ऐसा जो एक सामान्य बिंदु प्रतीत होता है, हो सकता है कि वह एक सामान्य बिंदु न हो जब उसे विश्व दृष्टिकोण के अन्य भागों से जोड़ा जाए।

३) वैश्विक नियोगकर्त्ता यह समझने के लिए अविश्वासी के विश्व दृष्टिकोण को अपना सकते हैं कि वह कैसे सोचते हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से वैश्विक नियोगकर्त्ता एक समझने योग्य तरीके से सुसमाचार संदेश प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकते हैं।

क) यह अधिक व्यावहारिक और प्रभावी है। वैश्विक नियोगकर्त्ता वहीं से आरम्भ करते हैं जहाँ लोग होते हैं, न कि जहाँ वह चाहते हैं कि वे हों।

ख) इस प्रकार परमेश्वर हम सभी के साथ व्यक्तिगत रूप से कार्य करते हैं?

३. संदेश के स्रोत के रूप में वैश्विक नियोगकर्त्ता।

क. जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, पहचान लोगों की शारीरिक नकल करने से उतनी नहीं होती, जितनी लोगों के साथ दैनिक अनुभवों में प्रवेश करने से होती है। यह केवल उनके जैसा दिखने से नहीं होती है। यह उनके साथ रहकर और उनके जीवन में "अंदर" जाकर किया जाता है ताकि आप उनके साथ बाहर से नहीं परन्तु भीतर से बातचीत कर सकें।

ख. यह पर्याप्त नहीं है कि वैश्विक नियोगकर्त्ता जानते हों कि श्रोता क्या मानता है। उन्हें पता होना चाहिए कि व्यक्ति ऐसा क्यों मानता है। यहाँ हम विभिन्न विश्व दृष्टिकोणों के विचार में प्रवेश करते हैं।

४. विश्व दृष्टिकोण और वैश्विक नियोगकर्त्ता के सन्देश का सार।

क. यह एहसास करना और स्वीकार करना आवश्यक है कि वैश्विक नियोगी और नए नियम के प्रचारकों ने अलग-अलग समूहों को अलग-अलग तरीकों से सुसमाचार संदेश दिया। सुसमाचार प्रचार की शैली और तरीका अलग-अलग थे जैसा कि संदेश का सार था।

ख. सुसमाचार की मूल सामग्री नहीं बदलती है (देखें १ कुरिं. २:२ और १५:१-८)। उसे प्रस्तुत करने का तरीका श्रोताओं की विशेष आवश्यकताओं और विश्व दृष्टिकोण पर निर्भर करेगा।

टिप्पणियाँ -

ग. एक व्यक्ति के लिए, जिस रीति से सुसमाचार संदेश उसे प्रभावित करता है, वह जीवन में अर्थ होने का विचार है। दूसरे व्यक्ति के लिए, यह सत्य जानने का विचार है। एक और के लिए, यह परमेश्वर के साथ संबंध रखने का विचार है।

१) प्रशिक्षित और प्रतिभाशाली प्रचारक यह समझने में सक्षम होंगे कि किस प्रकार से सुसमाचार श्रोता की आवश्यकता को पूरा करेगा।

२) प्रशिक्षित और प्रतिभाशाली वैश्विक नियोगी, जिन्हें अक्सर अन्य संस्कृतियों से मिलना होता है, वे यह समझने में सक्षम होंगे कि सुसमाचार को एक समझने योग्य तरीके से कैसे प्रस्तुत किया जाए (व्यक्ति के विश्व दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए)।

क) उन्हें शब्दों और अवधारणाओं की परिभाषाओं पर विचार करना चाहिए।

(१) हो सकता है कि एक विश्व दृष्टिकोण में "परमेश्वर" शब्द का अर्थ दूसरे विश्व दृष्टिकोण में समान न हो।

(२) इस प्रकार, वैश्विक नियोगकर्त्ता को परिभाषाओं के लिए शब्दों पर इतना भरोसा करना नहीं सीखना चाहिए। उन्हें वर्णनों, तुलनाओं और विरोधाभासों पर अधिक भरोसा करना चाहिए।

ख) उन्हें सुसमाचार संदेश के कुछ भागों के चयन पर विचार करना चाहिए।

(१) सत्य समय की अवधि में और प्राथमिकताओं के पदानुक्रम के अनुसार प्रसारित होता है। श्रोता की समझने की क्षमता के संबंध में विशेष चयन की उपयुक्तता और प्रभावशीलता द्वारा प्राथमिकताएं निर्धारित की जाती हैं।

(२) एक संस्कृति में पहले "नई सृष्टि" बनने के विचार पर ध्यान केंद्रित करना अधिक प्रभावी हो सकता है, जबकि दूसरी संस्कृति में परमेश्वर के प्रेम और दया पर ध्यान देना अधिक उपयुक्त हो सकता है।

ग) उन्हें अपने संदेश को अपने श्रोताओं के अनुकूल बनाना चाहिए।

(१) सबसे पहले, उन्हें उन उदाहरणों और उपमाओं की खोज करनी चाहिए जो लोगों से सबसे अच्छी रीति से संबंधित हों। उन्हें अपने श्रोताओं की विशिष्ट महसूस की गई आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए।

(२) वह ऐसे होने चाहियें जो सुसमाचार का संचार करने के लिए उपयोग किए जाने वाले पुलों की खोज करते हों।

टिप्पणियाँ -

घ) उन्हें संदेश को अपने श्रोताओं के विशेष जीवन पर लागू करना चाहिए।

(१) वैश्विक नियोगकर्त्ता को व्यक्ति के हृदय से बात करने का प्रयास करना चाहिए।

(२) उन्हें सुसमाचार को इस रीति से प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए कि सुसमाचार उनके जीवन को प्रभावित करते हुए देखा जा सके।

ग. कुंजियों को ढूंडना।

१. अवधारणा की पूर्ति।

क. विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग अवधारणाएं होती हैं जो उनके भीतर अस्तित्व में होती हैं। "अवधारणा की पूर्ति" तब होती है जब एक अवधारणा को पूरी रीति से समझाया जाता है या सुसमाचार के एक भाग द्वारा पूरा किया जाता है।

ख. हम इन घटनाओं को छुटकारे की उपमाओं के रूप में भी संदर्भित कर सकते हैं।

१) बाइबल में, यहूदियों के लिए, इस तथ्य ने कि यीशु परमेश्वर का मेमना था, उनकी होमबलि की अवधारणा को पूरा किया।

२) एक आधुनिक समय का उदाहरण।

क) बर्मा (म्यांमार) में करेन जनजाति ने अविश्वसनीय कलीसिया विकास का अनुभव किया है। यह सब "अवधारणा पूर्ति" के साथ आरम्भ हुआ।

ख) जनजाति की एक दन्तकथा थी कि एक दिन सत्य का शिक्षक आएगा। दन्तकथा में कहा गया कि यह शिक्षक अपनी बाजू के नीचे एक काली किताब लेकर आएगा।

ग) जब पहला वैश्विक नियोगी करेन जनजाति में आए तो उनके पास एक काली बाइबल थी और उसे उन्होंने अपनी बाजू के नीचे लिया हुआ था। जब उन्होंने वह बोलना आरम्भ किया जिसे उन्होंने सत्य होने का दावा किया, तो लोगों ने उत्सुकता से उनकी बात सुनी।

टिप्पणियाँ -

२. आँख खोलने वाला (एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति का संबंध जो समझ लाता है) खोजना।

लेखक की टिप्पणी:

निम्नलिखित उदाहरणों का उपयोग करते हुए सुसमाचार बाँटने हेतु एक पुल बनाने के लिए संस्कृतियों के बीच संबंध खोजने की प्रभावशीलता पर चर्चा करें।

उदाहरण #१

अध्ययन करें प्रेरितों २६:१७, १८

ध्यान दें कि किसी को अंधेरे और प्रकाश के बीच का अंतर देखने के लिए उसकी आँखें खुली होनी चाहियें।

परमेश्वर, जिन्होंने यह निर्देश दिया, उनको दूसरों की आँखें खोलने का तरीका प्रदान करना चाहिए।

उदाहरण #२

यीशु का उदाहरण।

यूह. ४ में यीशु और सामरी स्त्री के वृत्तांत का अध्ययन करें।

यीशु ने आँख खोलने (संबंध के साधन) के लिए क्या उपयोग किया?

ध्यान दें, इससे पहले कि वह उसकी पाप समस्या (उसकी विवाहित स्थिति) को संबोधित करना आरम्भ करें, वह सबसे पहले उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए उसे जीवित पानी देने का वादा करते हैं।

उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए यीशु संस्कृति का उपयोग कैसे किया?

ध्यान दें कि इससे पहले कि यीशु स्त्री को अंधकार से प्रकाश की ओर मोड़ना आरम्भ करते हैं, उन्होंने सबसे पहले उसकी संस्कृति के एक बिंदु को एक आँख खोलने वाले के रूप में उपयोग किया।

उदाहरण #३

पौलुस का उदाहरण।

अध्ययन करें प्रेरितों १७:१६-३४

पौलुस ने एक आँख खोलने वाले के रूप में क्या प्रयोग किया?

पौलुस ने लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर मोड़ने की दिशा में आगे बढ़ने हेतु संस्कृति का उपयोग कैसे किया?

वैश्विक नियोग III

टिप्पणियाँ -

IV. सामाजिक संरचना और सुसमाचार।

क. प्रतिष्ठा, भूमिकाएं और सामाजिक संरचना।

१. सामाजिक संरचना और कलीसिया का विकास।

क. सामाजिक संरचना वह तरीका है जिसमें लोग एक दूसरे के साथ अपने संबंधों को व्यवस्थित करते हैं।

ख. यह देखा गया है कि कलीसिया सबसे स्वाभाविक रूप से विकसित होती है जब वह सामाजिक संरचना के भीतर समान स्तर के अनुसार व्यवस्थित होती है।

२. प्रतिष्ठा और भूमिका।

क. प्रतिष्ठा वह स्तर है जो एक व्यक्ति का सामाजिक संरचना के भीतर होता है।

ख. भूमिका वह विशेष भाग या काम है जो सामाजिक संरचना के भीतर किसी व्यक्ति के पास होता है।

३. प्रतिष्ठा और भूमिका की धारणा (वैश्विक नियोगियों के लिए एक सामान्य समस्या)।

क. वैश्विक नियोगकर्त्ता की धारणाएं और वैश्विक नियोगकर्त्ता के संबंध में नागरिकों की धारणाएं बहुत भिन्न हो सकती हैं।

ख. नागरिकों की धारणा अक्सर वैश्विक नियोगकर्त्ता को लोगों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम होने से रोक सकती है।

ग. इस प्रकार, वैश्विक नियोगकर्त्ता को ध्यान से सोचना चाहिए कि वह किस भूमिका को निभाना चाहते हैं। उन्हें सोचना चाहिए कि अविश्वासियों के साथ, मसीहियों के साथ और उन मसीहियों के राष्ट्रीय अगुवों के साथ उनकी क्या भूमिका होनी चाहिए।

चर्चा विषय

उन संभावित भूमिकाओं पर चर्चा करें जो एक वैश्विक नियोगी ले सकता है। प्रत्येक भूमिका के लाभ और नुकसान क्या हैं? राष्ट्रीय अगुवों के साथ कौन सी भूमिकाएं अधिक उपयुक्त हैं?
अविश्वासियों के साथ?

टिप्पणियाँ -

४. सामाजिक संरचनाओं के प्रकार।

क. सजातीय।

१) अधिकांश या सभी लोग एक सामान्य जीवन में भाग लेते हैं। वे बहुत कुछ एक समान करते हैं।

२) एक ग्रामीण क्षेत्र में इस संरचना के होने की सबसे अधिक संभावना है।

ख. विजातीय।

१) संरचना के भीतर कई अलग-अलग संस्कृतियाँ और चीजों को करने के तरीके अस्तित्व में हैं।

२) एक शहरी क्षेत्र में इस संरचना के होने की सबसे अधिक संभावना है।

५. वर्ग।

क. सामान्य तौर पर, हम उच्च, मध्यम और निचले वर्गों का उल्लेख कर सकते हैं (हालाँकि कुछ समाजों में कई और अधिक परिभाषित वर्ग हैं)।

ख. ये वर्ग आकार और विशेषताओं में भिन्न होते हैं।

ख. संचार और सामाजिक संरचना।

१. समाज में संचार के विभिन्न दृष्टिकोण:

क. रोमन कैथोलिक दृष्टिकोण।

१) प्रारंभ में, वैश्विक नियोगी उच्च वर्ग को प्रभावित करने का प्रयास करता है।

२) समाज की अगुआई के माध्यम से, वे निचले वर्गों को प्रभावित करना चाहते हैं।

ख. साम्यवादी दृष्टिकोण।

१) प्रारंभ में, वैश्विक नियोगकर्त्ता, निराश निचले मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवियों को प्रभावित करने का प्रयास करता है।

२) वे उन्हें सक्षम और उच्च निचले वर्ग के लोगों के साथ क्रांति आरम्भ करने के लिए मिलाते हैं।

टिप्पणियाँ -

ग. प्रतिवादी दृष्टिकोण।

१) समाज के "बड़े भाग" पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। निचले मध्यम वर्ग और उच्च निचले वर्ग को अक्सर निशाना बनाया जाता है।

२) मसीहियत और "प्रतिवादी कार्य नैतिकता" का प्रभाव आंदोलन को "ऊपर की ओर गतिशील" कर देता है। दूसरे शब्दों में, जैसे कि कड़ी मेहनत, बचत और देर से संतुष्टि लोगों द्वारा सिल दी जाती है, तब फसल, उद्योग, धन में भौतिक लाभ प्राप्त होते हैं।

२. आमने-सामने समाजों की संरचना।

क. लोक समाज और आदिम समाज।

१) दोनों के बीच मुख्य अंतर यह है कि लोक समाज शहरी केंद्रों पर निर्भर हैं और आदिम समाज नहीं हैं।

क) लोक समाज आसपास के बसे शहरों या कस्बों के साथ व्यापार करते हैं और सांस्कृतिक रूप से प्रभावित होते हैं।

ख) आदिम समाज बाहरी सभ्यता से पूरी रीति से स्वतंत्र होते हैं।

२) इन समाजों में अगुआई करने वालों और अगुआई किए जाने वालों के बीच पर्याप्त अंतर नहीं है। वास्तव में विभिन्न वर्गों का विचार अस्तित्व में नहीं होता है।

३) समाज की संरचना परिवार समूहों और कुलों से बनती है। समाज बहुत सजातीय होता है।

ख. आमने-सामने समाजों में संचार।

१) प्रभावी संचार व्यक्तिगत संबंधों पर आधारित होना चाहिए।

२) प्रारंभ में, उन लोगों के साथ संचार किया जाना चाहिए जो स्वाभाविक रूप से जानकारी (प्राचीन, कबीले के प्रधान, परिवार के अगुवे) को आगे भेजने की स्थिति में होते हैं।

टिप्पणियाँ -

३) संचार को एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए। नए विचारों पर सोचने और अनुमोदन के लिए समय दिया जाना चाहिए।

४) समूह के निर्णयों के तात्पर्यों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। परिवर्तन और निर्णय लेने की चुनौतियाँ उन लोगों के सामने रखी जानी चाहिए जिनके पास ये निर्णय लेने का अधिकार है।

३. विजातीय समाजों की समस्या।

क. शहरी समाज जिनमें उपसंस्कृति समूह होते हैं।

१) वैश्विक नियोगकर्त्ता को बड़े समाज के भीतर विभिन्न समूहों के साथ संचार के विभिन्न तरीकों का उपयोग करने के महत्व और आवश्यकता का एहसास होना चाहिए।

२) इस प्रकार के समाजों में प्रतिष्ठा के महान प्रभाव पर विचार किया जाना चाहिए। उच्च प्रतिष्ठा वाले लोगों का आमतौर पर निचले स्तर के लोगों की जीवन शैली पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

ख. कलीसिया विकास के एकरूपता सिद्धांत पर विचार किया जाना चाहिए। लोग अक्सर अपने ही लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं।

४. सामाजिक संरचना के लिए सारांश।

क. मसीही सुसमाचार प्रचार की प्रतिक्रिया कभी-कभी धार्मिक कायलता से अधिक सामाजिक स्थिति से प्रभावित हो सकती है।

ख. मसीही संदेश का विरोध धार्मिक कारकों की तुलना में सामाजिक कारकों से अधिक प्रभावित हो सकता है।

ग. सामाजिक संरचना में परिवर्तन व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

घ. प्रभावी संचार आम तौर पर स्थापित सामाजिक संरचनात्मक नियमों का पालन करेगा।

ङ. एक संवेदनशील और बुद्धिमान वैश्विक नियोगकर्त्ता इस बात पर विचार करेगा कि सामाजिक संरचना के नियमों के भीतर कैसे संवाद किया जाए।

टिप्पणियाँ -

ग. सामाजिक संरचना और स्वदेशी कलीसिया का विकास।

१. स्वदेशी कलीसिया को अक्सर एक ऐसी कलीसिया के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें निम्नलिखित ये सभी है:

क. स्वशासन।
ख. आत्मनिर्भरता।
ग. स्व-अधिप्रचार।

२. ये बिंदु आवश्यक हैं परन्तु भ्रामक हो सकते हैं।

क. एक कलीसिया को नागरिकों द्वारा चलाया जा सकता है और वह फिर भी स्वदेशी नहीं हो सकती है।

१) यदि वे नागरिक केवल वैश्विक नियोगियों से सीखे गए रूपों और विधियों की नकल कर रहे हैं, तो वह एक स्वदेशी कलीसिया नहीं है।

२) किसी भी रीति से, नागरिकों को वचन का अध्ययन करने और संगठन और विकास के अपने तरीकों को चलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ख. एक कलीसिया के स्वदेशी होने का अर्थ यह नहीं है कि वह बाहरी स्रोतों से सहायता प्राप्त नहीं कर सकती है। वैश्विक नियोगी तब तक सहायता कर सकते हैं (और कुछ क्षेत्रों में सहायता करनी भी चाहिए) जब तक कि निम्न तीन बिंदु स्पष्ट हों।

१) वैश्विक नियोगकर्त्ता देने के साथ नियंत्रण को मिलाने की परीक्षा का विरोध करते हैं। विचार कुछ देने का होना चाहिए, नियंत्रण खरीदने का नहीं।

२) सहायता बुद्धि से देनी चाहिए।

क) जब हम स्वतंत्र रूप से देते हैं, तो हमें उन लोगों को देना चाहिए जो विश्वासयोग्यता प्रदर्शित करते हैं।

ख) यदि हमें जो कुछ हम देते हैं, उसे वास्तव में जाने देना है, तो उन लोगों में धर्मी चरित्र के विकास के कुछ प्रमाण होने चाहिए, जिन्हें हम इसके लिए जिम्मेदारी सौंपते हैं।

ग) हालांकि, यह जवाबदेही के साथ किया जाना चाहिए, परन्तु नियंत्रित करके नहीं।

टिप्पणियाँ -

३) आर्थिक सहायता को कलीसिया की दैनिक, सामान्य कार्यवाही में सहयोग नहीं देना चाहिए। सहायता को उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो स्वदेशी कलीसियाओं की पहुँच से बाहर हैं (उदाहरण के लिए, साहित्य का बड़े पैमाने पर प्रकाशन)।

३. स्वदेशी कलीसिया के विकास के लिए तात्पर्य।

क. हो सकता है कि वैश्विक नियोगी इस बात से सहज न हों कि स्वदेशी कलीसिया कैसी दिखती है और कैसे संचालित होती है।

ख. उसे वैश्विक नियोगी को अच्छा दिखना चाहिए जैसे वह स्थानीय विश्वासियों के सांस्कृतिक प्रश्नों के संबंध में उन्हें अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता देते हुए पवित्र आत्मा को दिखती है (प्रेरितों के काम १५:२८ और इसके संदर्भ को देखें)।

ग. स्वदेशी कलीसियाओं को वास्तव में "संस्थापित" नहीं किया जा सकता है। उन्हें ही स्थापित किया जा सकता है।

घ. कई बार, सच्चे स्वदेशी आंदोलन विदेशी वैश्विक नियोगियों के प्रत्यक्ष परिणाम नहीं होते हैं, परन्तु पवित्र आत्मा की अगुआई वाले नागरिकों के अनायास परिणाम होते हैं।

V. विलोबैंक रिपोर्ट।

लेखक की टिप्पणी:

विलोबैंक रिपोर्ट १९७४ में विलोबैंक, बरमूडा में कलीसिया के अगुवों की ऐतिहासिक बैठक के बाद बनाई गई सारांश दस्तावेज थी।

क. बाइबल और संस्कृति।

१. संस्कृति के बाइबल सम्बंधित आधार।

क. क्योंकि मनुष्य परमेश्वर की रचना है, इसलिए उसकी कुछ संस्कृति अच्छी और सुंदर है।

ख. मनुष्य के पतन के कारण, उसकी सारी संस्कृति पाप से प्रभावित हुई है और उसमें से कुछ शैतानी है।

वैश्विक नियोग III

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

अध्ययन करें उत्प. १:२६-२८ और निम्नलिखित पर चर्चा करें:
इन पद्यों के आदेश मानव संस्कृति की उत्पत्ति कैसे हैं?

अध्ययन करें उत्प. ४:१७-२२ और निम्नलिखित पर चर्चा करें:
इस गद्यांश में हमें संस्कृति के कौन से रूप मिलते हैं? वे पतन से कैसे प्रभावित हुए हैं?

२. संस्कृति क्या है?

क. सामान्य तौर पर यह प्रतिमानित तरीका है जिसमें लोग एक साथ काम करते हैं।

ख. संभवत: संस्कृति का सबसे समावेशी रूप भाषा है; क्योंकि किसी भी भाषा में संस्कृति के अनेक पहलू देखे जा सकते हैं।

ग. संस्कृति सभी मनुष्यों के लिए एक मूलभूत आवश्यकता प्रदान करती है। पहचान और सुरक्षा की भावना की आवश्यकता।

३. बाइबल आधारित प्रकाशन में संस्कृति।

क. हमें महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक सिद्धांत को स्मरण रखना चाहिए कि बाइबल एक सांस्कृतिक ख़ालीपन में नहीं लिखी गई थी।

ख. पवित्र आत्मा ने संस्कृति को एक ओर नहीं किया। उन्होंने सत्य को बताने के लिए संस्कृति का उपयोग किया, जैसा कि परमेश्वर के जीवित वचन, यीशु मसीह ने भी किया था।

४. आज परमेश्वर के वचन को समझना।

क. प्रासंगिक दृष्टिकोण।

१) इस प्रकार का बाइबल अध्ययन सांस्कृतिक संदर्भ और मूल भाषाओं पर विचार करता है। यह परमेश्वर के वचन को लागू करने और उसका पालन करने के महत्व पर भी जोर देता है।

२) यह बाइबल का अध्ययन करने वाले के सांस्कृतिक संदर्भ पर विचार करता है जबकि साथ ही यह मूल सांस्कृतिक संदर्भ और भाषा पर भी विचार करता है।

टिप्पणियाँ -

ख. बाइबल में जीवन और संस्कृति के सभी क्षेत्रों के विषय में विशेष रूप से शिक्षा सम्मिलित नहीं है।

१) हालाँकि, बाइबल चर्चा या निर्णय के किसी भी विषय के लिए पर्याप्त है।

२) पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, पाठक को बाइबल में पाए जाने वाले सिद्धांतों को संस्कृति के सभी क्षेत्रों में लागू करना चाहिए, भले ही उस क्षेत्र का बाइबल में विशेष रूप से उल्लेख न किया गया हो।

ख. सुसमाचार का संचार करना।

१. बाइबल और सुसमाचार।

क. एक निश्चित अर्थ में, सुसमाचार पूरी बाइबल में पाया जाता है (देखें यूह. ५:३९, ४०; २०:३१; २ तीमु. ३:१५)।

ख. यह समझना चाहिए कि बाइबल सुसमाचार की घोषणा कई रूपों में करती है। सुसमाचार के विभिन्न पहलू विभिन्न संस्कृतियों को आकर्षित करेंगे।

२. सुसमाचार के निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करें:

क. परमेश्वर सृष्टिकर्ता हैं।

ख. पाप सार्वभौमिक है।

ग. यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं।

घ. यीशु सबके प्रभु हैं।

ङ. यीशु अपनी प्रायश्चित मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उद्धारकर्ता हैं।

च. परिवर्तन आवश्यक है।

छ. पवित्र आत्मा का आना और उनकी परिवर्तनकारी सामर्थ।

ज. मसीही कलीसिया की संगती और वैश्विक नियोग।

झ. मसीह की वापसी की आशा।

वैश्विक नियोग III

टिप्पणियाँ -

३. सुसमाचार के संचार में सांस्कृतिक बाधाएं।

क. एक बड़ी समस्या यह अटल तथ्य है कि लोग सुसमाचार को अस्वीकार कर सकते हैं, क्योंकि इससे उनकी संस्कृति को खतरा होता है।

१) ध्यान दें कि कैसे यह में मामला प्रेरितों के काम २१:२८; १६:२१; १७:७ में था।

२) यीशु की प्रभुता हमेशा किसी भी संस्कृति के कुछ भागों को नष्ट कर देगी।

३) हालाँकि, संस्कृति के कई भाग ऐसे हैं जिन्हें नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें संरक्षित करने और बदलने या फिर से उठाने की आवश्यकता है।

ख. दूसरी बड़ी समस्या यह है कि सुसमाचार को अक्सर विदेशी सांस्कृतिक रूपों में लोगों के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

१) इससे प्राप्तकर्ता की ओर से क्रोध पैदा हो सकता है, जिसे ऐसा लगता है कि सुनाने वाले की संस्कृति उस पर थोपी जा रही है।

२) सुसमाचार इस नकारात्मक धारणा के साथ समान (संबद्ध) है।

४. वैश्विक नियोगकर्त्ता का चरित्र।

क. वैश्विक नियोगकर्त्ता की विनम्रता।

१) उसे इतना विनम्र होना चाहिए कि वह उन समस्याओं को स्वीकार कर सके जो संस्कृति पैदा कर सकती है।

२) उसे इतना विनम्र होना चाहिए कि वह लोगों की संस्कृति को सीख सके और उसकी सराहना कर सके।

३) उसे लोगों को उस बिंदु पर स्वीकार करने के लिए पर्याप्त विनम्र होना चाहिए जहाँ वे हैं और उस बिंदु से उनके साथ संवाद आरम्भ करना चाहिए।

४) उसे यह अंगीकार करने के लिए पर्याप्त विनम्र होना चाहिए कि एक स्थानीय प्रशिक्षित सेवक उसके काम से बेहतर काम कर सकता है।

५) उसे इतना विनम्र होना चाहिए कि वह पवित्र आत्मा पर भरोसा कर सके।

टिप्पणियाँ -

ख. मसीही गवाह होने के लिए एक नमूने के रूप में देहधारण।

१) यीशु ने कहा कि उनका आना हमारे जाने (बाहर भेजे जाने) के लिए एक नमूना होना चाहिए (यूह. २०:२१; १७:१८)।

२) देहधारण की सेवकाई हमारे रवैयों और दृष्टिकोण से आरम्भ होती है (फिलि. २:१-८ देखें)।

क) हमारे रवैये को हमें अपनी प्रतिष्ठा को त्यागने की अनुमति देनी चाहिए।

ख) इसे हमें अपनी स्वतंत्रता को त्यागने की अनुमति भी देनी चाहिए।

ग) इसे हमें लोगों के साथ जीवन की पहचान बनाने और साझा करने की अनुमति देनी चाहिए।

५. परिवर्तन और संस्कृति।

क. परिवर्तन के लिए एक कट्टरपंथी प्रकृति है। इसे नई सृष्टि और नए जन्म के संदर्भ में वर्णित किया गया है। परिवर्तन क्रांतिकारी हैं।

ख. परिवर्तन में अतीत के साथ स्पष्ट रूप से सम्बन्ध को तोड़ना सम्मिलित है। पश्चाताप का अर्थ है मुड़ना और दूसरे रास्ते जाना या किसी चीज से मुँह मोड़ लेना। हाँ, परिवर्तन का वर्णन स्वयं और अपने पुराने तरीकों के प्रति मरने के संदर्भ में किया गया है।

६. यीशु मसीह की प्रभुता।

क. नए जीवन परिवर्तित का विश्व दृष्टिकोण यीशु के प्रभुत्व से मेल खाना चाहिए।

ख. नए जीवन परिवर्तित को अपने व्यवहार में परिवर्तन प्रतिबिंबित करना चाहिए जो यीशु के प्रभुत्व पर आधारित होगा।

ग. नए जीवन परिवर्तित के संबंध बदल जाएंगे। वह तब भी संसार में होगा, परन्तु वह संसार का नहीं होगा।

घ. इसका अर्थ यह नहीं है कि नए जीवन परिवर्तित को अपनी संस्कृति को त्याग देना चाहिए। उसे अपनी संस्कृति के संदर्भ में अपनी मसीहियत को जीना चाहिए।

वैश्विक नियोग III

टिप्पणियाँ -

ग. संस्कृति में कलीसिया।

१. अतीत में, वैश्विक नियोगियों ने राष्ट्रीय कलीसियाओं को अपने "वहाँ की" कलीसिया की नक़ल बनाने के प्रयास में गंभीर गलती की है।

क. वर्तमान में, एक ऐसा दृष्टिकोण है जो स्वदेशी कलीसियाओं को बढ़ावा देता है। हालाँकि, कभी-कभी इन कलीसियाओं का परिणाम पश्चिमी नक़ल के अलावा और कुछ नहीं होता है। प्रशिक्षित अगुवे वैश्विक नियोगी की कठपुतली बन जाते हैं।

ख. राष्ट्रीय अगुवों को अपनी कलीसियाओं को अपनी संस्कृतियों के भीतर विकसित करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। केवल तभी वे कलीसिया को सही मायने में स्वदेशी रूप दे सकते हैं।

ग. राष्ट्रीय कलीसिया को स्वाभाविक रूप से विकसित होने देना चाहिए। वैश्विक नियोगी को अगुआई छोड़ने और वहाँ से जाने का उचित समय निर्धारित करना चाहिए। अनुमति मिलने पर ही कलीसिया स्वाभाविक रूप से विकसित होगी। पौलुस ने इसे २००० वर्ष पहले साबित कर दिया था।

२. "प्रांतीयवाद" से बचना चाहिए। राष्ट्रीय कलीसियाएं अपनी संस्कृतियों में वापस नहीं जा सकती हैं और स्वयं को बाकी कलीसिया से अलग नहीं कर सकती हैं। यीशु के स्थान पर संस्कृति की उपासना आरम्भ होने का खतरा है।

क. प्रत्येक कलीसिया सार्वभौमिक कलीसिया का एक भाग है, जो पूरी पृथ्वी पर मसीह की देह, समय और अनंत काल तक की है।

ख. प्रत्येक कलीसिया हर संस्कृति के जीवित परमेश्वर की आराधना करती है। हम अपनी संस्कृति का अभ्यास इसलिए नहीं करते क्योंकि यह हमारी करने वाली कार्यवाही है। हम इसका अभ्यास करते हैं क्योंकि यह प्राकृतिक और वास्तविक है। जब संस्कृति का अभ्यास एक करने वाली कार्यवाही बन जाती है, तब हमने संस्कृति को अप्राकृतिक और गलत स्थिति में डाल दिया होता है।

ग. प्रत्येक कलीसिया को देना और प्राप्त करना चाहिए। उन्हें दूसरों के साथ साझेदारी में होना चाहिए (फिलि. ४:१५)।

३. समन्वयवाद का खतरा।

क. कलीसिया को निष्पक्ष सांस्कृतिक रूपों और दुष्ट सांस्कृतिक रूपों के बीच परख करनी चाहिए।

ख. यदि दुष्टता केवल संगति से है तो रूप को मसीही अर्थ से पुन:भरना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

ग. यदि रूप में दुष्टता अंतर्निहित है या यदि संगती से नहीं बचा जा सकता है तो रूप को अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए। पवित्र आत्मा एक अन्य सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के साथ रूप को बदलने के लिए रचनात्मकता प्रदान कर सकते हैं।

४. संस्कृति पर कलीसिया का प्रभाव।

क. कलीसिया अनिवार्य रूप से संस्कृति को प्रभावित करेगी। यह संस्कृति को बदल देगी। इसे संस्कृति को बदलना ही चाहिए।

ख. कलीसिया को अन्याय और अनैतिकता के विरुद्ध खड़े होने का आदेश दिया गया है।

५. सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया।

क. सबसे पहले, इसे बलपूर्वक नहीं किया जा सकता है। लोग तब बदलते हैं जब वे बदलना चाहते हैं।

ख. दूसरा, वैश्विक नियोगियों को पहले से उपस्थित उन तंत्रों का सम्मान करना चाहिए जिनका उपयोग सामाजिक परिवर्तन आरम्भ करने के लिए किया जाता है।

ग. तीसरा, प्रतिस्थापन के सिद्धांत पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए।

१) यदि कोई परिवर्तन है तो उसे केवल उन्मूलन के रूप में नहीं आना चाहिए। उसे प्रतिस्थापन के रूप में आना चाहिए।

२) एक रिवाज को दूसरे रिवाज को प्रतिस्थापित और उसके खाली स्थान को भरना चाहिए जिसे अस्वीकार कर दिया गया है क्योंकि सभी रिवाजों के कुछ कार्य होते हैं (यहाँ तक कि बुरों के भी)।

घ. अंत में, अवश्य इसका एहसास करना चाहिए कि कुछ सांस्कृतिक प्रथाएं धर्मविज्ञान पर आधारित होती हैं और केवल तभी बदली जाएंगी जब धर्मविज्ञान को बदला जाएगा। यहाँ, मसीही शिक्षा को अधिक चाहत अनुसार विकल्प पेश करने चाहिए।

निष्कर्ष:

यह पाठ्यक्रमों की सेवा-नियुक्त कार्य श्रृंखला का समापन करता है। इस श्रृंखला ने सेवा-नियुक्त कार्य का इतिहास (पाठ्यक्रम #१), सेवा-नियुक्त कार्य की रणनीति (पाठ्यक्रम #२) और सेवा-नियुक्त कार्य में विभिन्न-सांस्कृतिक संचार (पाठ्यक्रम #३) का गहरा अध्ययन प्रदान किया है।

वैश्विक नियोग III

वैश्विक नियोग III: अंतिम टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ -

[१]जोनाथन लुईस, एड. वैश्विक नियोग - भाग III (पासाडेना, सीए: विलियम केरी लाइब्रेरी, १९८७)। इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा के प्रमुख बिंदुओं का प्रवाह सीधे वैश्विक नियोग - भाग III से अनुकूलित किया गया है। अनुमति द्वारा उपयोग किया गया है।

[२]आईबीड, चित्र ११.४, पृ. १७

वैश्विक नियोग III

टिप्पणियाँ -